Rashtriya Sahara 11.8.19 P.2

# भाषाओं को बचाने के लिए प्राथमिक शिक्षा मातृभाषा में होना जरूरी

**नई दिल्ली (एसएनबी)।** साहित्य अकादमी द्वारा 'अंतरराष्ट्रीय आदिवासी भाषा वर्ष' के अवसर पर आयोजित दो दिवसीय 'अखिल भारतीय आदिवासी लेखक उत्सव' का शनिवार को समापन हुआ। कार्यक्रम का पहला सत्र 'भारत की आदिवासी भाषाएं : संरक्षण एवं पुनरोद्धार' विषय पर केंद्रित था और बाकी तीन सत्रों में कहानी एवं कविता-पाठ के सत्र हुए।

कार्यक्रम में आए विभिन्न भाषाओं के जानकारों में कोरकू भाषा के ज्ञाता धर्मेंद्र पारे ने कहाकि हमारी देशज भाषाएं तभी बच पाएंगी जब हम प्रारंभिक शिक्षा कम से कम तीन वर्ष मातृभाषा में करवाएं।पहले सत्र की अध्यक्षता करते हुए के.वासमल्ली ने तमिलनाडु की तोडा जनजाति और उसकी भाषा के बारे में बताते हुए कहा कि इस भाषा की वर्णमाला में 54 अक्षर हैं और यह भाषा ध्वन्यात्मक है। इसके बोलने वाले मात्र 1500 लोग बचे हैं। इनके गीत मुख्यता मौसम के वर्णन पर आधारित होते हैं। उन्होंने कहा कि इनका साहित्य आज भी केवल वाचिक रूप में ही उपलब्ध है। उन्होंने कहाकि इन सभी भाषाओं का उत्थान तभी हो पाएगा जब हम इनके ऑडियो

> **साहित्य अकादमी का अखिल भारतीय आदिवासी लेखक उत्सव सम्पन्न**
>
> **नई पीढ़ी में देशज भाषाओं के प्रति लगाव उत्पन्न करने की दिशा में कार्य हो : भाषाविद्**

कैसेट्स बनाकर संगृहीत करें और नई पीढ़ी में इन देशज भाषाओं के प्रति लगाव उत्पन्न कर सकें। उन्होंने तोड़ा जनजाति द्वारा मानसून में गाया जाने वाला एक गीत भी प्रस्तुत किया।

कोरकू भाषा के ज्ञाता धर्मेंद्र पारे ने कहा कि इस भाषा को बोलने वाले मध्यप्रदेश और महाराष्ट्र में हैं और यह मुंडा समुदाय की भाषा के रूप में पहचानी जाती है। कोरकू का मतलब 'मनुष्य' है। उन्होंने कोरकू भाषा के कई शब्दों की समानता की 'हो' आदि भाषाओं से तुलना करते हुए कहा कि उनके कई शब्द एक समान हैं। उन्होंने अनुरोध किया कि यदि इन भाषाओं को देवनागरी और रोमन लिपि में लिखा जाए तो भी इनको कुछ हद तक बचाया जा सकता है। जय सिंहतोकबी ने कोर्बी भाषा, सृजन सुब्बा ने लिंबू भाषा, अमल राभा ने राभा भाषा और सुबोध हांसदा ने संताली भाषा की वर्तमान स्थितियों और भविष्य की योजनाओं के बारे में विस्तार से चर्चा की।

साहित्य अकादमी के उपाध्यक्ष माधव कौशिक ने अकादमी द्वारा आदिवासी भाषाओं के विकास के लिए किए जा रहे विभिन्न कार्यक्रमों की जानकारी देते हुए कहा कि मातृभाषाएं केवल संवाद के लिए ही नहीं बल्कि हमारी संस्कृति के विकास के लिए भी बहुत आवश्यक हैं।